per Medical Council of India Curriculum and if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF HEALTH & FAMILY WELFARE (SHRI A. R. ANTULAY): (a) and (b) A few machines of electrotherapy are out of orders since, July, 1995 in the Central Institute of orthopaedics of Safdarjang Hospital. Rehabilitation Department has been providing electrotherapy services to the patients of Central Institute of Orthopaedics. Action has been initiated by hospital authorities to enter into Annual maintenance service Contract with the concerned companies.

(c) There are 24 posts of Physiotherapists and 12 posts of occupational Therapists out of which 3 incumbents have submitted their resignations.

(d) 2090 and 1210 approximately patients visited the Central Institute of Orthopaedics during April & May, 1995 respectively and 1756 patients visited in November, 1995.

(e) Orthopaedic Surgeons possess qualifications which is recognised by Medical Council of India for these type of services.

Modalities for choosing PSU shares for disinvestment

2643. SHRI ASHOK MITRA: Will the Minister of INDUSTRY be pleased to state:

(a) the modality for choosing the public sector undertakings the shares of which are proposed to be disinvested;

(b) the criteria by which the exact proportion of shares to be disinvested are decided for each undertaking; and

(c) the instances where shares have been disinvested at prices lower than quotations in the stock exchanges?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INDUSTRY (DR. C. SILVERA): (a) to (c) The selection of PSUs for disinvestment is made depending upon their profitablity for the last three years and which are engage in the sectors considered attractive in the given market conditions. The proportion of shares to be disinvested depends upon the market conditions. During October 1995, round of disinvestment, the shares of four PSUs were disinvested at average prices higher than market quotations.

द्वारका में खुदाई कार्य

2644. **श्री राम जेठमलानी:**
श्री मेहश्वर सिंह:
श्रीमती सुषमा स्वराज:

क्या **प्रधान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि गुजरात में जामनगर जिले के समीप पुराणों में वर्णित द्वारका नगरी की पुनः खोज करने हेतु वर्षों पूर्व समुद्र में खुदाई करने का कार्य शुरू किया गया था;

(ख) यदि हां, तो इस संबंध में ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या सरकार ने इस परियोजना को कार्यान्वित करने हेतु एक बड़ी धनराशि आवंटित की थी;

(घ) यदि हां, तो कुल कितनी धनराशि आवंटित की गई थी और अब तक इस परियोजना पर कितनी धनराशि व्यय की जा चुकी है; और

(ङ) इस परियोजना के कार्य को कब तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है?

प्रधान मंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री और परमाणु ऊर्जा तथा अंतरिक्ष विभागों में राज्य मंत्री और विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भुवनेश चतुर्वेदी): (क) और (ख) 1981 से द्वारका में तट तथा गहरे सागर में किए गए खोजबीन और खुदाई से प्राचीन बंदरगाह, पोतों, लंगरों तथा अन्य शिल्प की चीजों के कुछ अवशेषों की खोज की जा सकी है। अब तक किए गए अन्वेषण कार्यों से पता चला है कि प्राचीन नगर द्वारका लगभग 3500 वर्ष पहले समुद्र में डूब गया था। तथापि, यह स्पष्ट करना संभव नहीं हो पाया है कि डूबने के कारण समुद्र के स्तर का उठना था अथवा टैक्टानिक विक्षोभ।

(ग) से (ङ) विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा 32 लाख रु० की कुल लागत की निधि प्रदत्त परियोजना के तहत इस परियोजना पर वास्तविक कार्य शुरू किया।